5. 108 बार माधव नाम जप

(मन में माधव नाम जप करें)

जगन्नाथ महाप्रभुका 'माधव'
नाम 108 बार जपें।
जोर से उच्चारण न करें।
उँगलियों पर गिनते हुए
मन में नाम जप करें।

6. श्रीमद्भागवत महापुराण का एक अध्याय पठन विधि

(प्रतिदिन श्रीमद्भागवत महापुराण का स्वयं पठन)

प्रतिदिन ब्रह्म मुहूर्त, 3.45 प्रातः से रात्री 12.00 के बीच में एक अध्याय श्रीमद्भागवत महापुराण का स्वयं पाठ करें। स्वयं पाठ करने में असमर्थता की स्थिति में किसी और के द्वारा किये गए पाठ को सुनें।

पठन से पहले किसी एक विधि का विनियोग कर सकत हैं

- मन में तीन बार 'श्री गंगे' का जाप कर मानस गंगा स्नान करें
- हाथ पाऊँ धो कर 'श्री गंगे' मन में उच्चारण करें
- पूर्ण स्नान करें

7. जयघोष

(सभी खड़े होकर हाथ उठा कर जयघोष करें)

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणम् त्वमेव
[त्वमेव सर्वं मम देव देव॥]*3 बार
ॐ नमो ब्रह्मण्य देवाय गोब्राह्मण हिताय च।
जगत् हिताय कृष्णाय गोविंदाय नमो नमः॥
ॐ अनंत कोटि विश्व ब्रह्माण्ड नाथ परमब्रह्म नारायण महाविष्णु भगवान कल्किराम [श्री श्री श्री सत्य अनन्त माधव महाप्रभु जी की - जय]।*3बार
[महालक्ष्मी माता की - जय]। *3बार
[वैष्णो देवी माता की - जय]। *3बार
[भगवान श्री परशुरामजी की - जय]। *3बार
[सर्व देवी-देवताओं की- जय]। *3बार
[सत्य-सनातन धर्म की जय]। *3बार

हे प्रभु! शीघ्र से शीघ्र भक्तों का एकत्रीकरण हो।
[बोलो प्रेम से आनंदे एक बार हरि-हरि] *3 बार
हे प्रभु! पृथ्वी पर सत्य, प्रेम, दया, क्षमा और शांति की स्थापना हो
[बोलो प्रेम से आनंदे एक बार हरि-हरि] *3 बार
हे प्रभु! सम्पूर्ण विश्व में सनातन धर्म की स्थापना हो।
[बोलो प्रेम से आनंदे एक बार हरि-हरि] *3 बार

जय श्री माधव

॥ जय श्री माधव ॥

विश्व सनातन धर्म

त्रिकाल संध्या

भगवान *कल्कि राम श्री श्री श्री सत्य अनंत माधव* को प्राप्त करने के लिए पांच आचरण का पालन करें :

1. बात मानना सीखिए
2. प्रतीक्षा करना सीखिए
3. प्रेम करना सीखिए
4. उपवास करना सीखिए
5. मैं, मेरा, तू, तेरा के भाव को छोड़िये

अनुक्रमणिका (क्रम-सूची)

1. सत्संग मंत्र
2. श्री विष्णोः षोडशनामस्तोत्रम्
3. श्रीदशावतार ह्यतोत्रम्
4. दुर्गा- माधव स्तुति
5. 108 बार माधब नाम जप (मन में करें)
6. श्रीमद्भागवत महापुराण की प्रतिदिन पठन विधि
7. जयघोष

लाइव त्रिकाल संध्या से जुडने के लिए कोड स्केन करे...
TRISANDHYA - Satyug Ka Marg
YouTube Channel
99230 71727
www.trisandhya.com

Scanned with OKEN Scanner

1. सत्संग मंत्र

1. ['ॐ' कार]*3 बार
2. [ॐ भूर्भुवः स्वः
तत्सवितुर्वरेण्यं।
भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात्]॥ *3 बार

2. श्री विष्णोः षोडशनामस्तोत्रम्

(श्री विष्णुजी के सोलह नाम)

औषधे चिन्तयेत् विष्णुं।
भोजने च जनार्दनम्॥
शयने पद्मनाभं च।
विवाहे च प्रजापतिम्॥
युद्धे चक्रधरं देवं।
प्रवासे च त्रिविक्रमम्॥
नारायणं तनुत्यागे।
श्रीधरं प्रियसंगमे॥
दुःस्वप्ने स्मर गोविन्दं।
संकटे मधुसूदनम्॥
कानने नारसिंहं च।
पावके जलशायिनम्॥
जलमध्ये वराहं च।
गमने वामनम् चैव॥
पर्वते रघुनन्दनं।
[सर्व कार्येशु माधवम्] ॥ *3 बार

षोडशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्
सर्वपाप विनिर्मुक्तो विष्णुलोके महीयते॥

3. श्रीदशावतार स्तोत्रम्

(श्री जयदेव जी द्वारा रचित दश अवतार स्तोत्र)

प्रलय पयोधि-जले धृतवान् असि वेदम्।
विहित वहित्र-चरित्रम् अखेदम्।
केशव धृत-मीन-शरीर जय जगदीश हरे॥ 1॥

क्षितिरति-विपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे।
धरणि-धरण-किण चक्र-गरिष्ठे॥
केशव धृत-कच्छप-रूप जय जगदीश हरे ॥ 2॥

वसति दशन-शिखरे धरणी तव लग्ना।
शशिनि कलंक-कलेव निमग्ना॥
केशव धृत-शूकर रूप जय जगदीश हरे ॥ 3॥

तव कर-कमल-वरे नखम्-अद्भुत-शृंगम्।
दलित-हिरण्यकशिपु-तनु-भृंगम्॥
केशव धृत-नरहरि-रूप जय जगदीश हरे ॥ 4॥

छलयसि विक्रमणे बलिम्-अद्भुत-वामन।
पद-नख-नीर-जनित-जन-पावन॥
केशव धृत-वामन-रूप जय जगदीश हरे॥ 5॥

क्षत्रिय-रुधिर-मये जगद्-अपगत-पापम्।
स्नपयसि पयसि शमित-भव-तापम्॥
केशव धृत-भृगुपति-रूप जय जगदीश हरे॥ 6॥

वितरसि दिक्षु रणे दिक्-पति-कमनीयम्।
दश-मुख-मौलि-बलिम् रमणीयम्॥
केशव धृत-रघुपति-रूप जय जगदीश हरे॥ 7॥

वहसि वपुषि विशदे वसनम् जलदाभम्।
हल-हति-भीति-मिलित-यमुनाभम्॥
केशव धृत-हलधर-रूप जय जगदीश हरे॥ 8॥

निन्दसि यज्ञ-विधेर् अहह श्रुति जातम्।
सदय-हृदय-दर्शित-पशु-घातम्॥
केशव धृत-बुद्ध-शरीर जय जगदीश हरे॥ 9॥

म्लेच्छ-निवह-निधने कलयसि करवालम्।
धूमकेतुम्-इव किम्-अपि करालम्॥
केशव धृत-कल्कि-शरीर जय जगदीश हरे॥ 10॥

श्री-जयदेव-कवेर्-इदम्-उदितम्-उदारम्।
शृणु सुख-दम् शुभ-दम् भव-सारम्॥
केशव धृत-दश-विध-रूप जय जगदीश हरे॥ 11॥

4. दुर्गा- माधव स्तुति

(दुर्गा- माधव स्तुति पाठ)

जय हे ! दुर्गा माधव कृपामय कृपामयी।
दुर्गान्कु सेबी माधव होइले मो दीअं साईं॥ 0॥
जय हे...

बहू रुपे जय दुर्गे, ब्यापी अछु सर्ब ठाबे।
रमा उमा बाणी राधा तो छड़ा अन्य के नाहिं ॥ 1॥
जय हे...

मदन मोहन रुपे ब्यापी अछु सर्ब ठाबे।
मोहन चित्त मोहिलू श्री सर्ब मंगला तुही॥ 2॥
जय हे...

धर्म संस्थापने जन्म यदी हवन्ति नारायण ।
दुर्गान्कु छाड़ी माधव खेलि बार शक्ति काहिं ॥ 3॥
जय हे...

माधवन्क खेल पाइं देह धरू महामायी।
माधवन्कु पति पुत्र रुपे खेलाउछु तुही॥ 4॥
जय हे...

माधव न्कु दुर्गा कोले जेहुं देखे बेनी डोले।
ताहार भाग्यर कथा ब्रह्मा शिबे न जोगाई॥ 5॥
जय हे...

जय दुर्गति नाशिनी अभिरामर जननी।
शुभागमन करंतू माधव न्कु कोले नेई॥ 6॥
जय हे...

Scanned with OKEN Scanner